औषधीय पौधे की खेती कर किसान बन रहे आत्मनिर्भर

चक्रधरपुर | शंभू कुमार

बंजर व बेकार पड़ी जमीन पर औषधीय पौधे लगाकर किसान आत्मनिर्भर बन अच्छी आय कर रहे हैं। यह सबकुछ कोंकुवन हर्ब्स समिति की निदेशक रूपाली दत्ता महापात्रा व सह संस्थापक राजेश्वर धवाला की टीम के प्रयास से संभव हो पाया है।

जंगल, पहाड़ व सुदरूवर्ती क्षेत्र की बंजर जमीन को चिह्नित कर आदिवासी किसानों को प्रशिक्षण देकर आगे बढ़ाने का काम टीम कर रही है। सुदूरवर्ती क्षेत्र के किसानों के घर तक बीज मुहैया कराने से लेकर, प्रशिक्षण व उत्पादन के बाद खरीदारी कोंकुवन हर्ब्स समिति ही करती है। रूपाली दत्ता महापात्रा लगभग दस लोगों की टीम बनाकर पूरे जिले में काम कर रही है। रूपाली कहती हैं कि हमारा उद्देश्य सुदूरवर्ती क्षेत्र के किसानों को आत्मनिर्भर बनाना है।

पहल

- बंजर जमीन पर तुलसी, गिलोय, मुकनापुरीन्स की कर रहे खेती
- सुदूरवर्ती क्षेत्र के किसानों के घर तक बीज पहुंचाती है समिति
- लगभग चालीस गांवों के किसान कोंकुवन समिति से जुड़े

औषधीय पौधों की खेती की जानकारी देती रूपाली दत्ता महापात्रा। • हिन्दुस्तान

छह सौ किसान कर रहे औषधीय पौधों की खेतीः पश्चिमी सिंहभूम जिला के विभिन्न प्रखंडों में लगभग छह सौ किसान औषधीय पौधों की खेती कर रहे हैं। जिले के नोवामुंडी, चक्रधरपुर, सोनुवा, बंदगांव इत्यादि प्रखंड के लगभग चालीस गांवों के किसान कोंकुवन से जुड़कर औषधीय पौधों की खेती कर रहे हैं। जहां लगभग चार सौ से पांच सौ एकड़ जमीन पर तुलसी, गिलोय, मुकनापुरीन्स, अश्वगंधा, कालमेघ, सर्पगंधा इत्यादि औषधीय पौधों की खेती हो रही है।

इससे किसानों की आर्थिक स्थिति भी अच्छी हुई है। औषधीय पौधों की खेती करने से सालाना लगभग डेढ़ से दो लाख रुपये की आमदनी हो रही है।

किसानों की आर्थिक स्थिति हो रही ठीकः पहाड़ी व सुदरवर्ती क्षेत्र में पानी की समस्या के कारण खेती न कर पाने वाले किसानों के लिए कोंकुवन समिति के औषधीय पौधों की खेती वरदान साबित हो रही है।

औषधीय पौधों की खेती करने वाले किसानों ने बताया कि पहले उन्हें औषधीय पौधों की खेती से होने वाले फायदों के बारे में जानकारी नहीं थी। लेकिन रूपाली दत्ता महापात्रा व राजेश्वर धवाला ने हमें इसके बारे में जानकारी देकर आगे बढ़ाने का काम किया है। इसमें कोंकुवन समिति का पूरा सहयोग मिलता है। खेती के बाद उत्पादित सामान को भी समिति के सदस्य अच्छे दामों पर खरीदते हैं। इससे किसानों की आर्थिक स्थिति अच्छी हो रही है। इनके जीवन स्तर में काफी सुधार हो रहा है।